Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 6
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

एण्टोनियो ग्राम्शी : आधिपत्य का सिद्धान्त 'नवमार्क्सवाद के विशेष संदर्भ में एक अवलोकन'

नीलिमा सिन्हा
सहायक प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रानीगंज, प्रतापगढ़ (उ0प्र0)

Article Info

Publication Issue :
November-December-2023
Volume 6, Issue 6

Page Number : 124-130

Article History
Received : 02 Dec 2023
Published : 21 Dec 2023

शोधसारांश – ग्राम्शी दो स्तरो पर लड़ाई करने को स्वीकार करता है। वह मानता है कि इस समय जितने भी मार्क्सवादी है वे केवल सत्ता के परिवर्तन की बात करते है। जबकि वे नागारिक समाज की मानसिकता को खत्म करने की बात नही करते है। जबकि ग्राम्शी पहले मानसिकता में परिवर्तन करने की बात करता है उसके बाद राज्य सत्ता में परिवर्तन करना होगा। हमको पूजीवादी मानसिकता को उलट कर हमको सर्वहारा वर्ग की मानसिकता स्थापित करना होगा। उसके बाद जो क्रान्ति होगी वह सफल तथा स्थायी होगी। इस प्रकार ग्राम्शी अपना आधिपत्य का सिद्धान्त देता है।

मुख्य शब्द– एण्टोनियो ग्राम्शी, आधिपत्य का सिद्धान्त, नवममार्क्सवाद, उग्रवादी, आन्दोलन।

एण्टोनियो ग्राम्शी की गणना असाधारण प्रतिभा के वामपन्थी चिन्तको में होती है। मार्क्सवादी इतिहासकार ई0जे0 हाब्सबाम का कहना है कि वे पश्चिमी यूरोप में बीसर्वी सदी के सम्भवतः सर्वाधिक मौलिक साम्पवादी विचारण थे। कुछ लोगों का यहाँ तक मानना है कि गाम्शी उग्रवादी साम्यवाद के ऐसे प्रतिनिधि है जिनके व्यक्तित्व और कृत्तित्व में विचार और आचरण की अद्भुत एकता है। इटली के श्रमिक आन्दोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी में उनके चिंतन को अधिक यथार्थपरक और व्यावहारिक जमीन पर खड़ा किया है।

ग्राम्शी का जन्म 1891 ई0 में इटली में हुआ था और उसकी मृत्यु 1937 में हुई। वह मूल रूप से इटली का रहने वाला था उसने ट्यूरिन विश्वविद्यालय से शिक्षाशास्त्र से एम0ए0 किया शिक्षा पूरी करने के बाद उसका रूझान समाजवादी विचार की तरफ हुआ और उसने इटली के समाजवादी दल की सदस्यता स्वीकार की। जब 1917 में रूस में क्रान्ति हुई तो उसके बाद ग्राम्शी को लगा कि समाजवादी सिद्धान्त में समझौतावादी तत्व अधिक है। इस कारण उसने समाजवादी सदस्यता को छोड़कर साम्यवाद को स्वीकार कर लिया, जिसके कारण उसने ट्यूरिन शहर के मजदूरों को संगठित करना शुरू किया और उनके अधिकार दिलाने का प्रयास कियाा, वहाँ जो पहले मजदूर यूनियन थे वे अपने अधिकारों या माँगों को पूरा नही करवा पाते थे। इसी कारण ग्राम्शी ने फैक्टरी काउंसिल आन्दोलन शुरू किया, जिसके सदस्य अपने बात को बड़े आक्रामक तरह से रखते थे, उनका उद्देश्य था कि फैक्टरी पर मजदूरों का अधिकार ही और वही फैक्टरी का संचालन तथा नियन्त्रण करें। लेकिन यह आन्दोलन सफल नही हो सका बल्कि 3–4 वर्ष तक ही चला क्योंकि मजदूरों में एकता न होने के कारण अपने उद्देश्य को प्राप्त नही कर सके। इसलिए

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

उसने महसूस किया कि मजदूरों का कल्याण तथा एकता के लिए एक दल चाहिए जिसके लिए उसने इटली में साम्यवादी दल की स्थापना की। उसने साम्यवादी दल को मजबूत बनाने के लिए देष के विभिन्न भागों में संगठन बनाया और इसका प्रचार भी किया। लेकिन उसी समय इटली में मुसोलिनी का उदय हुआ। मुसोलिनी ने साम्यवाद को अपना दुश्मन माना और उसने साम्यवादी दल के सदस्यो का उत्पीड़न करना शुरू किया। 1926 में गाम्शी को पकड़कर जेल में डाल दिया गया। उस समय वह रीढ़ की बीमारी से पीड़ित था जिसके चलते उसका जेल का जीवन बड़ा पीड़ादायक रहा। इसी के चलते 1937 में उसकी मृत्यु जेल में हो गयी।

ग्राम्शी ने अपने जेल के जीवन में साहस का परिचय दिया उसने मार्क्स वाद से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थों का अध्ययन किया साथ ही उन सिद्धान्तों का अध्ययन किया जो यूरोप में प्रचलित थे। इसके साथ ही उसने लेखन कार्य किया, उसने 'प्रिजन नोट बुक' नामक पुस्तक लिखी। उसकी मृत्यु के बाद उसके मित्रों ने व्यवस्थित करके इसको प्रकाशित करवाया था।

ग्राम्शी सिद्धान्त निर्माता के साथ–साथ संगठनकर्ता भी था क्योंकि उसका उद्देश्य साम्यवादी दल को इटली में स्थापित करना था और उसे शक्तिशाली बनाना था। इस कारण कुछ विचारक ग्राम्शी को इटली का लेनिन कहते है।

ग्राम्शी ने मार्क्सवादी विचारों को तो स्वीकार किया लेकिन वह उसको पूर्ण रूप से स्वीकार नही करता है बल्कि उसमें संशोधन करता है। ग्राम्शी इटली में साम्यवाद का प्रसार करना चाहता था जिससे कि इटली का उद्धार कर सके और साम्यवादी आन्दोलन को आगे बढ़ा सके लेकिन बीमारी के कारण वह इन लक्ष्यों को पूरा न कर सका।

इटली –जर्मनी में जो साम्यवादी थे वे मार्क्स की इस व्याख्या को स्वीकार नही करते थे, जिसे लेनिन तथा स्टालिन बल्कि इन विचारको ने उससे भिन्न अपने विचार दिये जिसके चलते वे नवमार्क्सवादी कहलाए। इन्ही को पश्चिमी मार्क्सवादी भी कहा जाता है।

पहली बार 1930 में ल्यूकाच ने कहा कि मार्क्सवाद की जो व्याख्या रूस में हो रही है वह गलत है क्योंकिक इसमें केवल भौतिक तथा आर्थिक पक्ष पर अधिक बल दिया जा रहा है।

उन्होंने माना कि आधार के साथ–साथ अधिसंरचना पर भी बल दिया जाए।

वही मार्क्स ने स्वीकार किया कि इतिहास के निर्माण पर आर्थिक पक्ष के साथ–साथ दर्शन तथा विचार का भी प्रभाव पड़ता है। जबकि रूस में केवल भौतिक तथ्य को लेकर चले, और विचार, दर्शन के पक्ष को छोड़ दिया गया। इस तरह रूसी मार्क्सवाद द्वारा मार्क्स के हीगलवादी पक्ष की पूर्ण उपेक्षा की गयी।

इसलिए नवमार्क्सवादी मार्क्स के हीगलवादी पक्ष को भी प्रस्तुत करते है।

नवमार्क्सवादियों ने माना कि मार्क्स में हीगलवादी तत्व पाया जाता है अगर उसकी उपेक्षा की जाएगी तो मार्क्स के विचारों के साथ अन्याय होगा जबकि मार्क्स में संरचना तथा अधिसंरचना दोनो है इसलिए दोनो को साथ लेकर चलना चाहिए। इटली का सबसे महत्वूपर्ण साम्यवादी विचारक बेनितो क्रोशे जो ग्राम्शी का गुरू भी था उस पर हीगल का गहरा प्रभाव पड़ा था। उसने लिखा अगर मार्क्स को ठीक प्रकार से जानना है तो हीगल के सन्दर्भ में पढ़ना पड़ेगा। इसी का समर्थन ग्राम्शी ने भी किया। उसने कहा कि मार्क्स में भौतिक पक्ष के साथ–साथ दर्शन तथा विचार भी पाया जाता है। इस तरह ग्राम्शी मार्क्स को ज्यादा नये तरीके से देखते है और उस पर विचार करते है। उन्होंने माना कि मार्क्स का चिन्तन व्यापक है इसको कैद करना उचित नहीं है। इस तरह वह आर्थोडाक्स मार्क्सवाद से भिन्न हो जाता है।

वह मार्क्स को ज्यादा सम्यक दृष्टि से देखता है और वह लेनिन तथा स्टालिन की दृष्टि को सही नही मानता है।

किसी भी समाज में पूजीवादी सभ्यता को जानना है कि शोषण कैसे हो रहा है तो केवल राज्य कीी ओर ध्यान देकर नही जाना जा सकता है, बल्कि नागरिक समाज को भी जानना होगा। ग्राम्शी मानता है कि मार्क्स ने कहा जहाँ पूजीवादी सबसे ज्यादा होगे वही कान्ति होगी, लेकिन रूस में जो क्रान्ति आयी वह विकसित उद्योगों के फलरूवरूप नही बल्कि कृषि पर आधारित था जो लेनिन के प्रयास से हुई।

ग्राम्शी मानता है कि क्रान्ति इटली, जर्मनी, यूरोप के देशों में होना चाहिए था जहाँ विकसित उद्योग थे लेकिन वहा ऐसा नही हुआ, इस पक्ष की चुनौती को वह स्वीकार करता है।

ग्राम्शी मानता है कि विकसित देशों में क्रान्ति होनी चाहिए, लेकिन वहाँ क्रान्ति नहीं हुई। इसी कारण को ग्राम्शी उठाता है जो सबसे महत्वपूर्ण है। ग्राम्शी क्रान्ति के न होने के निम्न तर्क देता हैः–

क्रान्ति इसलिए नहीं हुई कि हमारी दृष्टि केवल राज्य पर थी, हमने नागारिक समाज पर ध्यान नही दिया। वह मानता है कि मजदूर इसी नागारिक समाज में रहते है वे पूजीवादी मानसिकता से ग्रस्त है। इस कारण क्रान्ति नही हुई क्रान्ति के लिए सर्वहारा दृष्टि होनी चाहिए।

अगर यूरोप को साम्यवादी बनाना है तो जिस प्रकार की कार्यशैली हो, उसी प्रकार कार्य किया जाए तभी क्रान्ति होगी, इस कारण उसने दल, कार्य पद्धति का सिद्धान्त दिया जिससे क्रान्ति होगी और साम्यवाद स्थापित होगा।

प्रिजन नोट बुक में उसने अपनी मान्यताओं की विस्तार से चर्चा नही कि बल्कि उसने एक संकेत दिया था।। वह मूलरूप से दार्शनिक था जिससे इटली की राजनीति को साम्यवादी दिशा दी जा सके।

ग्राम्शी ने साम्यवादी सिद्धान्त को स्थापित करने में बुद्धिजीवियों की भूमिका का वर्णन किया जो किसी अन्रू विचारकों ने नही किया। ग्राम्शी मानता है कि अपने विचार या चिंतन से ही रास्ता तलाश करना पड़ेगा तभी साम्यवाद स्थापित होगा, भौतिक पक्ष द्वारा नहीं।

इस तरह ग्राम्शी अधिसंरचना (दर्शन, विचार) को अधिक महत्व देता है। वह मानता है कि आर्थिक तथा भौतिक दिशा को केवल विचारधारा द्वारा ही दिशा दी जायेगी। इस तरह ग्राम्शी दर्शन तथा विचार दोनों को महत्व देता है। इसलिए डेविड मैकमिलन ने ग्राम्शी को अधिरचना का सिद्धान्तकार कहा।

ग्राम्शी मानता है कि किसी समाज की स्थापना में बुद्धिजीवियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। समाज में सब व्यक्तियों के पास बुद्धि होती है लेकिन उसमें भी जो प्रखर बुद्धि के हो, जो चीजो को दूर तक जान ले, समाज तथा इतिहास को दिशा दे सकते है। इस कारण समाज के निर्माण में बुद्धिजीवियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ग्राम्शी ने बुद्धिजीवियों के दो प्रकार बताये।

1. परम्परागत बुद्धिजीवी वर्ग
2. नयी दृष्टि से सम्पन्न बुद्धिजीवी वर्ग

ग्राम्शी मानता है कि जो परम्परागत बुद्धिजीवी वर्ग है ये व्यक्ति को आत्मा और परमात्मा के बीच उलझा देते हैं जिसके कारण व्यक्ति राज्य पर ध्यान नही दे पाता है न ही समाज को समझ पाता है। इस तरह ये व्यक्ति को जीवन के आर्थिक–भौतिक पक्ष से दूर ले जाते है।

इसलिए ग्राम्शी कहता है कि हमको इन परम्परागत बुद्धिजीवियों के स्थान पर नये क्रान्तिकारी बुद्धिजीवी चाहिए, जो सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों पर विचार करें और हमको इससे निकालने का प्रयास करें।

ग्राम्शी ने बुद्धिजीवियों के तीन कार्य बताये –

1. वर्तमान परिस्थितियों का विश्लेषण करना
2. उसके दोषो को बताना और
3. हमको उन दोषों से निकलने का उपाय बताना।

अगर ऐसा होगा तभी समाज में परिवर्तन होगा।

जहाँ लेनिन मानता है कि क्रान्ति स्वतः आती है जबकि ग्राम्शी मानते है ऐसा नही है बल्कि बुद्धिजीवी हमें बताते है कि हम किन परिस्थितियों में रह रहे है यह गलत है और इसकी जगह दूसरी व्यवस्था लानी होगी। तभी क्रान्ति होगी। इस तरह बुद्धिजीवी हमको जाग्रत करते है और व्यवस्था विश्लेषण करते है।

ग्राम्शी मानते है कि मजदूर वर्ग में स्वयं चेतना नहीं आती है बल्कि बुद्धिजीवी चेतना पैदा करते है इस कारण हमको एक दल चाहिए जिसमें बुद्धिजीवी वर्ग होगे और हमको बतायेगे कि क्या उचित है। इस तरह ग्राम्शी दल को महत्व अधिक देता है। इसलिए कम्युनिष्ट पार्टी के लिए 'राजकुमार' शब्द का प्रयोग करता है। जिस तरह से मैकियावली राज्य में राजा को महत्व देता है उसी तरह गाम्शी ने कम्युनिष्ट पार्टी के लिए आुधनिक राजकुमार शब्द का प्रयोग किया।

यह दल या पार्टी हमारा मार्गदर्शन करेगा और वर्तमान स्थिति के विरोधाभास को जानेगा और हमको बतायेगे कि इसका उपचार कैसे हो। अगर ये लोग नही होगे तो क्रान्ति नही होगी। ग्राम्शी ट्रेड यूनियन में विश्वास नही करता बल्कि सम्पूर्ण व्यवस्था परिवर्तन की बात करता है। इस तरह दर्शन तत्व की बात करता है। आन्दोलन तभी होगा जब स्पष्ट दर्शन होगा, जिससे बुद्धिजीवी मजदूर वर्ग में चेतना पैदा करेंगे।

इस तरह आधार तथा अधिसंरचना दोनों को प्रभावित करता है। इस तरह मैकमिलन गाम्शी को द्वन्दवादी मार्क्सवादी मानता है।

प्लेनांक नामक विचारक मानता है कि मार्क्स ने कहा था कि इतिहास के निर्माण में आर्थिक तथा भौतिक चीजे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस सिद्धान्त को इतिहास का नियतिवाद कहा जाता है। जिसका मतलब है कि इतिहास का निर्माण एक निश्चित दिशा में हो रहा है जिसको मार्क्स ने देख लिया और वह उसी रूप में होगा। जबकि कुछ विचारक मानते है कि इतिहास के निर्माण को भौतिक तथा आर्थिक चीजे प्रभावित करती है। लेकिन ग्राम्शी इन दोनों मान्यताओं को स्वीकार नही करता है और उसने प्लेनॉक के मार्क्सवाद की व्याख्या को ब्लगर मार्क्सीनिजम कहा है। क्योंकि ये लोग मार्क्स के विचार के केवल भौतिक तथा आर्थिक पक्षो को ही अधिक महत्व देते है।

जबकि ग्राम्शी ने कहा अगर मार्क्स की पुस्तक 'आर्थिक और दार्शनिक पाण्डुलिपियाँ 1844' का अध्ययन किया जाए तो एक नया दृष्टिकोण मार्क्स के प्रति आयेगा। क्योंकि मार्क्स आर्थिक, भौतिक पक्ष के साथ–साथ दर्शन को भी अधिक महत्व देता है। इसी कारण ग्राम्शी ने भी अधिसंरचना को अधिक महत्व दिया । गाम्शी ने माना कि अगर मार्क्स को सही तरह से समझना है तो आधार तथा अधिसंरचना में एक द्वन्दात्मक सम्बन्ध है। जिसका मतलब है कि आर्थिक तथा भौतिक तत्व दर्शन को प्रभावित करते है उसी प्रकार दर्शन इन आर्थिक भौतिक कारकों को प्रभावित करता है।

ग्राम्शी मानता है कि मार्क्स द्वन्दात्मक भौतिकवादी है। वह पुराना भौतिकवादी नही है जिसमें केवल यह माना जाता था कि पदार्थ ही हर चीज को प्रभावित करता है स्वयं किसी चीज से प्रभावित नही

होता है। जबकि मार्क्स का द्वन्दात्मक भौतिकवाद यह मानता है कि पदार्थ सबको प्रभावित करता है लेकिन वह स्वयं दर्शन से भी प्रभावित होता है।

ग्राम्शी मानता है कि जो दृष्टि मार्क्स को समझने के लिए चाहिए वह रूसी विचारको में नही है बल्कि वे मार्क्स की सही व्याख्या नही करते है वे अपने हितो का जामा पहनाकर उसकी व्याख्या करते है।

ग्राम्शी एक ऐसा विचारक है जो मार्क्स से प्रभावित है लेकिन वह मार्क्स का अनुयायी नही है जैसा कि लेनिन, स्टालिन है। वह मार्क्स की व्याख्या उच्च स्तर पर करता है।

ग्राम्शी मानता है कि मार्क्स ने अपनी पुस्तक 'द कम्युनिष्ट मैनीफेस्टो' में भविष्यवाणी की थी कि जहाँ पूजीवाद अपने चरम पर पहुँच चुका है वही इसके अन्तर विरोध भी बहुत बढ़ गया है। इस कारण निकट भविष्य में क्रान्ति होगी। उन्होंने यह भी संकेत दिया था कि इग्लैण्ड तथा जर्मनी में उद्योग ज्यादा विकसित है इस कारण वहाँ सबसे पहले क्रान्ति होगी।

ग्राम्शी मानता है कि प्रथम विश्व युद्ध के बाद पूरे यूरोप में आर्थिक संकट आ गया था, जो पूजीवाद के लिए सबसे बड़ा ग्रहण था, इसलिए इसमें सर्वहारा क्रान्ति होनी चाहिए थी क्योंकि हर जगह असन्तोष व्याप्त था लेकिन ऐसा नही हुआ, इसलिए ग्राम्शी उस स्थिति की विवेचना करता है कि क्रान्ति क्यों नही हुई। इस कारण उसने 'आधिपत्य का सिद्धान्त' दिया

ग्राम्शी ने माना कि पूजीवाद कोई स्थिर प्रणाली नही है बल्कि इसमें हमेशा कुछ न कुछ संकट आते रहते है क्योंकि यह व्यवस्था उत्पादन, सप्लाई तथा लाभ कमाने पर निर्भर है इस कारण दोष उत्पन्न हो जाते है। लेकिन इस संकट में भी मजदूर वर्ग क्रान्ति नही करते है क्योंकि इन मजदूरों पर भी पूजीवाद का प्रभाव रहता है जिसके चलते तमाम अंसतोष होते हुए भी क्रान्ति नही होती है। ग्राम्शी ने माना की समाज के दो पक्ष होते है।

1. राजनीतिक समाज और
2. नागारिक समाज

ग्राम्शी मानता है कि राजनीतिक समाज में राजनेता, प्रशासन और नौकरशाह आते है। जबकि धर्म, स्कूल, चर्च, आर्थिक संस्थाएं, परिवार सब नागारिक समाज में आते है।

समकालीन राजनीतिक चिंतन में हीगल ने पहली बार राज्य तथा नागरिक समाज में अन्तर किया और नागारिक समाज को स्टेनल स्टेट कहा। उसके इस विचार को मार्क्स ने ग्रहण किया था। ग्राम्शी मानता है कि इन्ही दोनों के मिलने से राज्य का निर्माण होता है।

ग्राम्शी मानता है कि मार्क्स ने पूजीवादी समाज की जो व्याख्या की कि राज्य पूजीपति की कठपुतली है तो सही है लेकिन मार्क्स नागरिक समाज को अनदेखा कर देता है या उस पर ज्यादा ध्यान नही देता है और वही उसके अनुयायियों ने भी नागारिक समाज पर ध्यान नही दिया।

ग्राम्शी ने माना कि पूजीपतियों का अधिकार राज्य पर अधिक होता है और साथ ही नागारिक समाज पर होता है। राज्य के पास जो शक्ति या बल होता है उसको पूजीपति अपने हितो के पक्षपोषण करने के लिए करते है और नागारिक समाज पर भी अपना नियन्त्रण या आधिपत्य करते है। जैसे नागारिक समाज में जो स्कूल है उसमें पूजीवादी विचार का पाठ पढ़ाया जाता है और नागारिकों को पूजीवादी मानसिकता का बनाया जाता है। यह कार्य अन्य संस्थाएं कर रही है, जिसमें पूजीवादी विचार नागारिक समाज में सर्वत्र व्याप्त हो जाता है। नागारिक समाज में वही विचार रहते है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पूजीपति के हितो को पूरा करते है, इसलिए नागारिक समाज मे इसी पूजीवादी दर्शन को बढ़ाया जाता है।

इस कारण मजदूर वर्ग क्रान्ति नही कर पाते है क्योंकि पूजीपति का नागारिक समाज पर पूरी तरह से आधिपत्य रहता है इस कारण जो पूजीवादी मानसिकता होती है वही मजदूरों की मानसिकता हो जाती है और सारे मजदूर इसी मानसिकता से ग्रस्त रहते है उनको वही चीज आकर्षित करती है जो पूजीवादी मानसिकता की हो। इसीलिए सर्वहारा वर्ग क्रान्ति नही कर पाते है और उनके अन्दर कितना ही असन्तोष क्यो न हो लेकिन क्रान्ति नहीं होती है।

ग्राम्शी मानता है कि क्रान्ति इसलिए नही हो रही है क्योंकि नागारिक समाज पर पूजीपति का नियन्त्रण स्थापित हो चुका है। यह नियन्त्रण राज्य तथा नागारिक समाज पर होता है। ग्राम्शी मानता है कि पूजीपति पहले शक्ति के सहारे नियन्त्रण करते है लेकिन पूजीपति जानते है कि शक्ति के सहारे ज्यादा दिन तक नियन्त्रण नही किया जा सकता है इस कारण ऐसी व्यवस्था, संरचना तथा विचारधारा स्थापित करते है जिसको की नागारिक समाज स्वीकार कर ले और अपनी सहमति प्रदान कर दे। इस कारण इनका आधिपत्य शक्ति के साथ ही सहमति पर आधारित रहता है। गाम्शी स्वयं वह कहता है कि मजदूर स्वयं क्रान्ति नही कर पाते है बल्कि मजदूर स्वयं पूजीपति बनना चाहता है। तो वह क्रान्ति कहाँ से करेगा। इस तरह ग्राम्शी मानता है जब सब सहमति पर आधारित हो जाता है तो क्रान्ति कैसे होगी बल्कि पूजीपति के द्वारा इसको रोक लगा दी जाती है। इस तरह ग्राम्शी मानता है कि पूजीपति सहमति द्वारा नागारिक समाज पर नियन्त्रण कायम करते है।

ग्राम्शी मानता है कि नागरिक समाज पर जो आधिपत्य होता है वह विचारों का आधिपत्य होता है जो नागारिक समाज पर छाया रहता है। व्यक्ति इन्ही विचारों के संरक्षण में अपना जीवन जीता है। ग्राम्शी मानता है कि जो विचार पूजीपतियों का विचार होता है जिसको वे सार्वभौमिक बनाकर समाज पर स्थापित करते है। मार्क्स ने स्वयं लिखा है कि जिसके पास आर्थिक शक्ति होती है उसी का ही विचार शक्ति पर आधिपत्य रहता है और उसी को हर जगह लागू किया जाता है और व्यक्ति इसी विचार के इर्द–गिर्द घूमता है। इस तरह हम सम्पूर्ण पूजीवाद से घिरे रहते है और पूजीवाद का जो आदर्श रहता है वही नागारिक समाज का आदर्श बन जाता है।

ग्राम्शी मानता है कि जब पूजीवादी मानसिकता हर जगह व्याप्त होती है तो क्रान्ति कहाँ हो सकती है, जो थोड़े बहुत संकट आते भी है पर मजदूर वर्ग क्रान्ति नही कर पाते है क्योंकि पूजीपति शिक्षा, धर्म, आर्थिक कारक से नियत्रित करने का प्रयास करते है या थोड़ा बहुत छूट मजदूर वर्ग को दे–देते है। जिससे मजदूर वर्ग सन्तुष्ट हो जाता है।

ग्राम्शी मानता है कि यही विचार दशा आज यूरोप में चल रही हैं। इसलिए यहाँ क्रान्ति नही हो सकती है। ग्राम्शी चाहता था कि अगर यूरोप में क्रान्ति नही तो इटली में क्रान्ति जरूर होनी चाहिए जिससे वहाँ पूजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेका जाए।

मार्क्स तथा ग्राम्शी में यह अन्तर है जहाँ मार्क्स पूजीपति का आधिपत्य केवल राज्य तक मानता है वही ग्राम्शी मानता है कि पूजीपति राज्य पर आधपित्य के साथ ही नागारिक समाज पर आधिपत्य रखता है। मार्क्स इसी पक्ष को अनदेखा कर देता है। ग्राम्शी मानता है कि नागारिक समाज पर पूजीपति का नियन्त्रण सबसे ज्यादा खतरानाक है।

ग्राम्शी मानता है कि मार्क्स ने पूजीपति द्वारा नागारिक समाज के आधिपत्य को नही देख पाता है लेकिन जब हम मार्क्स को पढ़े तो उसके जो पक्ष अनदेखा किया है उसको भी देखने का प्रयास करे।

ग्राम्शी ने कहा कि पूजीवादी राज्य की सत्ता को हस्तगत करना आसान है लेकिन पूजीवादी मानसिकता से छूटकारा पाना सबसे ज्यादा कठिन कार्य है। ग्राम्शी मानता है कि जो बोल्शेविक क्रान्ति हुई उसमें तो पूजीवादी राज्य को खत्म कर दिया गया लेकिन पूजीवादी मानसिकता वैसे ही नागरिक समाज में व्याप्त रह गयी। जो और विकट समस्या पैदा करती है। इस कारण ग्राम्शी रूस की क्रान्ति को सच्ची क्रान्ति नही मानता है क्योंकि यह क्रान्ति एक प्रकार की तानाशाही को खत्म करके दूसरे प्रकार की तानाशाही को स्थापित कर देती है, इसलिए ग्राम्शी रूसी क्रान्ति को आदर्श नही मानता है। यूरोप तथा इटली की क्रान्ति के लिए दूसरे आदर्श को अपनाने की बात करता है। ग्राम्शी मानता है कि रूसी क्रान्ति ने केवल राज्य की संरचना को ही बदला है नागारिक समाज को नही बदला है।

इस कारण ग्राम्शी मानता है अगर सफल क्रान्ति करना है तो पहले नागारिक समाज से पहले पूजीवादी मानसिकता को धीरे–धीरे खत्म करना होगा, यह प्रक्रिया लम्बे समय तक चलेगी, यह विचारधारा की लड़ाई होगी जिसमें हथियार की कोई आवश्यकता नही होगी बल्कि विचारधारा के माध्यम से लोगों के अन्दर चेतना पैदा करना होगा, जिससे की व्यक्ति पूजीवाद के प्रति संचेत हो सके, तभी नागारिक समाज को मुक्त किया जा सकता है और व्यक्ति के अन्दर सर्वहारा के गुण विकसित किया जा सकता है। जिससे नागारिक समाज में परिवर्तन आये। इस तरह ग्राम्शी मानता है सबसे पहले मनुष्य को बदलना होगा। वह मानता है कि मजदूरों के दिल तथा दिमाग से पूजीवादी मानसिकता को खत्म करना होगा।

इस तरह हमको पूजीवाद का रास्ता अनेक प्रकार से अवरूद्ध करना पड़ेगा, क्योंकि यह लड़ाई लम्बी होगी, इसलिए हमें अनेक मार्ग अपनाना पड़ेगा तथा धैर्य से कार्य करना पड़ेगा क्योंकि विचारधारा की लड़ाई लम्बी चलती है।

ग्राम्शी मानता है जब हम आश्वस्त हो जाए कि हमने नागारिक समाज से पूजीवादी मानसिकता को कमजोर कर दिया है तथा हमको संगठित होकर बाहर से आक्रमण या सीधा हमला करना होगा तभी पूजीपति का नाश होगा। जब तक ऐसा नही होगा तब तक क्रान्ति सफल नहीं होगी।

इस तरह ग्राम्शी दो स्तरो पर लड़ाई करने को स्वीकार करता है। वह मानता है कि इस समय जितने भी मार्क्सवादी है वे केवल सत्ता के परिवर्तन की बात करते है। जबकि वे नागारिक समाज की मानसिकता को खत्म करने की बात नही करते है। जबकि ग्राम्शी पहले मानसिकता में परिवर्तन करने की बात करता है उसके बाद राज्य सत्ता में परिवर्तन करना होगा। हमको पूजीवादी मानसिकता को उलट कर हमको सर्वहारा वर्ग की मानसिकता स्थापित करना होगा। उसके बाद जो क्रान्ति होगी वह सफल तथा स्थायी होगी। इस प्रकार ग्राम्शी अपना आधिपत्य का सिद्धान्त देता है।

संन्दर्भ ग्रन्थ

1. डा0 पुखराज जैन, डा0 अरूणोदय बाजपेयी– राजनीति सिद्धान्त एवं अवधारणाएं
2. जीवन मेहता– समकालीन राजनीतिक विचारक
3. ओ0पी0 गाबा– समकालीन राजनीतिक सिद्धान्त
4. ओ0पी0 गाबा– पाश्चात्य राजनीतिक विचारक
5. ओ0पी0 गाबा– समकालीन राजनीतिक विचारधाराएं
6. ज्ञान सिंह सन्धू– राननीतिक सिद्धान्त
7. आर0सी0 वरमानी – राजनीतिक अवधारणायें
8. डा0 बी0एल0 फड़िया, डा0 कुलदीप फड़िया – समकालीन राजनीतिक सिद्धान्त
9. स्वयंप्रभा